eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

संत कबीरः चितंन के विविध आयाम

[1]डॉ0 दुर्गेश कुमार राय
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, के०जी०के० पी० जी० कॉलेज, मुरादाबाद (उ०,प्र०)

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

कबीर दास ऐसे कवि जो संत, भक्त, समाज सुधारक और फकीर थे। जिनके जैसा आज तक न कोई हुआ और ना ही शायद होगा। कबीर दास समाज सुधारक के साथ ही हिंदी साहित्य के एक महान समाज कवि थे। उन्होंने अनोखा सत्य के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन तथा कल्याण किया। जिससे मानव कुसंगति, छल कपट, निंदा, अंहकार, जाति भेदभाव, धार्मिक पाखंड आदि को छोड़कर एक सच्चा मानव बल सकता है। उन्होंने समाज में चल रहे अंधविश्वासों, रूढ़ियों पर करारा प्रहार किया। कबीर शांतिमय जीवन बीताते थे और वे अंहिंसा, सत्य, सदाचार आदि को अपने जीवन में अपनाया और दूसरो को भी सिख देते थे। उनका सभाव क्रांतिकारी प्रवृत्ति होने के कारण उन्होंने ऊंच–नीच तथा समाज में जाति– पाति के भेदभाव का विरोध किया।

उस समय समाज में हिंदू पर मुस्लिम आतंक फैला हुआ था। उन्होंने ऐसा मार्ग अपनाया जिससे समाज में फैली बुराईयों को दूर किया जा सके। कबीर ने अपनी सारा जीवन तथा साहित्यों के आधार पर मानव जाति को एक अच्छा संदेश दिया। जिस संदेश को हमे अपने जीवन में अपना चाहिए। उनके साहित्य में समाज सुधारक की भावना है। जिसे इस प्रकार देख सकते हैं।

बीज शब्द – दार्शनिक, भक्ति, ईश्वरीय ज्ञान, सद्कर्म, ईश्वरीय उपवास।

Introduction

हिंदी साहित्य जगत बहुत पुराना है इस जगह के द्वितीय चरण भक्ति काल तथा सवर्णयुग के नाम से भी जाना जाता हैं। इस युग के दो धाराएं प्रचलित थी पहला सगुणधारा के अन्तर्गत में राम काव्यधारा व कृष्ण काव्यधारा और दुसरा निर्गुणधारा धारा के अन्तर्गत संत काव्यधारा व सुफी काव्यधारा शामिल थे। प्रस्तुत शेर लेखन का विषय संत काव्यधारा के प्रमुख समाज सुधारक कवि कबीर दास है। संसाररूपी सागर में बहुत सारे रत्रों का जन्म हुआ। हमारे भारतवर्ष तो रत्नों से भरा हुआ है। उन्हीं महान रत्नों में से एक थे। संत कबीर वे पहले एक समाज सुधारक थे, बाद में एक कवि तथा भक्त

©IJARMS JOURNAL, 2024

कबीर दास जी का जन्म १३६८ में माना जाता है। उनका जन्म और माता–पिता को लेकर बहुत विवाद है लेकिन यह स्पष्ट है कि कबीर जुलाहा थे।उन्होंने अपनी कविता में इस बात का जिक्र कई बार किया है। कबीर अपनी ब्रह्म को निर्गुण और सगुण से परे मानते थे और उनका कहना था कि–

"हम निर्गुण तुम सर्गुण जाना"

इस प्रकार वे स्वयं को सगुणसगुणोपासना की पद्धति से अलग कर लेते हैं। उनका ब्रह्म न तो वेद ग्रन्थ लिखित ईश्वर हैन कुरान लिखित खुदा। कबीर दास जी को पढ़ना–लिखना नहीं आता था। वे निरक्षर थे पर वे एक महान् सुप्रसिद्ध दार्शनिक थे। उनका कहना है कि–

"मसि कागद छूयौ नहीं कलम गहयौ नहीं हाथ

कबीर ने सन १५१८ को काशी के पास मगहर में देह त्याग किया। उनकी जन्म की भांति मृत्यु तिथि एंव घटना को लेकर भी मतभेद है। उनकी मृत्यु को लेकर ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के बाद उनके शव का अंतिम संस्कार हिन्दू रीति से होना चाहिए था या मुस्लिम रीति से। इस विवाद के चलते जब उनके शव पर से चादर हटा तो शव नहीं बल्कि कुछ फूल मात्र ही पड़ा हुआ था। तदपश्चत, कुछ फूल हिन्दुओं ने तो कुछ मुस्लिमों ने लिए और अपनी अपनी रितिरीवाज के अनुसार फूलों का अंतिम संस्कार किए। कबीर ने अपना सम्पूर्ण जीवन एक समाज सुधारक के रूप में व्यतीत किया। उन्होंने समाज में फैली पाखण्ड, अंधविश्वास, मूर्ति पूजा, हिंसा, छुआछूत, भेदभाव विरोध किया है। उनका धारणा था कि संसार में सभी मानव एक ही ईश्वर के संतान है। हिन्दू तथा मुस्लिमों की एकता पर भी बल दिया और धर्म के आधार पर हो रही भेदभाव तथा दंगो का पुरजोर विरोध किया। उनका कहना एह था कि ईश्वर हमारे कण कण तथा हमारे अंतरात्मा में ही बसते है। जैसे हिरण कस्तूरी की खुशबू को जंगल जंगल ढूंढता फिरता रहते है हालांकि वह खुशबू अपनी ही नाभि में से निकलती है पर वह यह कभी जान ही नहीं पाती। इसी प्रकार ईश्वर भी हमारे कण कण में समाहित है पर हम मनुष्य उसे तीर्थों, मंदिरों आदि में खोजते फिरते है।

"कस्तूरी कुण्डली बसै, मृग ढूँढे वन माहिं

"एसै घटि घटि राम है, दुनियां देखे माहिं"

©IJARMS JOURNAL, 2024

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर दास से समाज से बुराईयों को दूर करने के लिए प्रेम को प्रधानता दिया। प्रेम के माध्यम से ही समाजिक बुराईयों को दूर किया जा सकता है। जिसमें प्रेम दया, करुणा है वही सबसे बड़ा पंडित है।

"पोथी पढ़—पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय

ढाई आखर प्रेम का,पढ़ै सो पंडित होयेद्य"10

उनका कहना है कि बड़ी—बड़ी ग्रंथों, किताबों का ज्ञान रखने वाला कोई सजा पंडित या वि}ान नहीं हो सकता। मनुष्यों को अहंकार को त्याग देना चाहिए तथा गर्व नहीं करना चाहिए लेकिन यदि कोई मनुष्य प्रेम का ढाई अक्षर भी पढ़ लेता है तो वही सच्चा ज्ञानी तथा अच्छामनुष्य होगा। यह मनुष्य का जन्म एक बार ही होता है। दूसरों पर हसना नहीं चाहिए अच्छा कर्म करना चाहिए।

संत कवि कबीर दास ने हिंसा पर पूरजोर विरोध किया है जो मनुष्य जीवो को खाते हैं। वे मानव नहीं पशुओं के भांति है।

बकरी पाती खात है, ताकि काढी खाल ,

जे नर बकरी खात हैं ,तिनको कौन हवाल द्य

संत कवि कबीर कहते हैं कि बकरी हरी पत्तियों को खाती है फिर भी उसकी खाल उधेडी जाती हैं तो फिर जो लोग उनको मार कर खा लेते हैं उनके साथ क्या करना चाहिए।

"कबीर गरब न कीजिये ,कबहूँ न हंडिया

अबकी नाव समुद्र में, का जाने का होय।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात,

एक दिन छिप जाता, जो तारा प्रभात।

संत कबीर जात—पात, ऊंच—नीच को नहीं मानते थे। वे समाज मे व्याप्त वर्ण व्यवस्था का विरोध करते है और मानवता को महत्व देते है। कबीर कहते हैं कि जाति—पाती को कोई नहीं पूजता। हम सभी मनुष्य है और एक ही भगवान की उपज है। हरि का यह मतलब है जीवन में सद्कर्म, सद शिक्षा, सद ज्ञान से नाता जोड़ना।

"जात पात पूछे ना कोई,

हरि को भजो सो हरि का होई

कबीर का मानना है कि ईश्वर तो संसार के कण–कण में समाहित है तो क्यों पत्थर की पूजा करने से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। अगर ऐसा है तो मैं पहाड़ को पूज लेता। इससे अच्छा है कि श्घर में उपस्थित चक्की को पूज लेता जो अनाज को पीस कर लोगो का पर भरे। वे मूर्ति पूजा का विरोध करते है, वे कहते है।

कबीर पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजू पहार।

धरकी चाकी क्यों नाहिं पूजै पीसि खाय संसार।

साम्प्रदायिकता का क्या अर्थ है कि दूसरे के धर्म के नीचा दिखा कर खुद के धर्म को उंचा उठाना नही। कबीर धर्म के आधार पर भेदभआव करने वाले मुस्लमान तथा हिन्दूओं का विरोध पर बल दिया है। वे कहते हैं कि देखो संतों कि हिंदू राम के भक्त है और तुर्क को रहमान प्यारा है) और दोनों ही लड़ कर अपना प्राण गवह रहे हैं पर सच्चाई किसी न जाना कि ईश्वर एक है।

सन्तों देखहु जग बैराना।

हिन्दू कहे मोहि राम पियारा, तुरक कहै रहिमाण

आपस में दोऊ लरि– लरि गुए, मरम न काहू जाना।

कबीर समाज के पाखण्डवाद पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं जो दिन भर तो व्रत रखते हैं। परन्तु रात को गाय का मास खाते हैं मैं नहीं समझ पाता की इससे ईश्वर कैसे खुश होते है उन्होंनेसमाज मे व्याप्त पाखण्ड बाद का खण्डन किया है।

दिन भर रोजा रहत है, रात हनत दे गाय।

यह तो खून व बन्दगी कैसे खुशी खुदाय।

संत कबीर फिर हिन्दुओं पर माला जपते तथा तिलक लगाते तथा दाढ़ी उगाने से कैसे भक्त बन जाते हैं। भक्त के लिए तो मन पवित्र होना चाहिए।

ष्माला तिलक लगाई के, भक्ति न आई हाथ

दाढ़ी मूछ मुराय कै , चलै दुनी के साथ

दाढ़ी मूछ मुराय कै हुहा, घोटम घोट

मन को क्यों नहीं मूरिये, जामै भरीया खोट

कबीर को समझ नहीं आता कि आवाज देकर चिल्लाने से कैसे ईश्वर की प्राप्ति होती है वे इन मुस्लिम समुदाय को पाखण्ड कहते हैं। वे कहते हैं कि धर्म का सम्बन्ध तो सत्य से जोड़ कर असत्य का निषेध करना है–

कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाए

ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।

करीब समाज की कल्याण के लिए लोक मंगल की भावना को प्रोत्साहिता करते है। समाज में सुधार के लिए लोक कल्याण की कामना करते हुए वे कहते हैं कि ससांर में यदि कोई आप से मित्र नहीं है तो दुश्मन भी न हो। कबीर मानव को एक ही शक्ति के उपजं मानते हैं। मानव को स्वार्थी या संकीर्ण भावना को छोड़कर उच्च तथा आदर्श जीने का उपदेश देते हैं।

ष्कबीर खड़ा बाजार में, मांगे सब की खैर,

ना काहू सौ दोस्ती, न काहू सौ बैर।

संत कवि कहते हैं कि मानव ज्ञान और कर्म के आधार पर मानव सच मानव बनता है। साधु की जाति नहीं पूछों पूछों, उनका ज्ञान को समझना चाहिए। उसी तरह तलवार का महत्व होता है, ना कि म्यान का। मनाव को ना तो जाति, खानदान उचा बनाता है बल्कि इसका कर्म ही उसे महान बनता है।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान

मोल करो तलवार का ,पड़ा रहने दो मयान।

कर्म के लिए मानव को परिश्रम के माध्यम से ही समाज से गरीबी तथा सफलता का आनंद छिपा रहा है जो मानव परिश्रम होना पढ़ता है। परिश्रम के माध्यम से ही समाज से गरीबी तथा सफलता का आनंद छिपा रहा है जो मानव परिश्रम करता है ईश्वर भी उसी का साथ देते हैं वे कहते हैं कि–

ष्कवीर उघम अवगुण को नहीं, जो हरि जाने कोय ।

उघम में आनन्द है, साई सेती होय।1

वे दुर्बल, निम्र तथा जाति के लोगों के दुख ना देने की उपदेश देते हैं। वे समाज के घमंड, कुरान लोगों का विरोध कर कल्याणकारी भावना के समर्थक थे।

शीलवन्त सबसे बड़ा ,सवाल रत्न की खानि

©IJARMS JOURNAL, 2024

तीन लोक की समंदर, रही सील में आनि।

संत कबीर सपूर्ण जगत् को एक ही परिवार मानते थे वे संसार में सुधार के लिए वे संसारको विनम्रता, दया ज्ञान सदैव देते हैं। जीवन मे दया तथा विनम्रता से बड़ा कोई भी गुण नहीं है। यदि आप के पास सारे दुनिया की दौलत होने के बाद भी अगर आप के पास सारे दुनिया की दौलत होने के बाद भी अगर आप के पास विनम्रता का दौलत न हो तो सम्मान नहीं मिल पाती। कबीर को श्वाणी का डिक्टेटर कहा जाता है क्योंकि कवि अपने दोहो तथा वाणी के माध्यम सेसंसार में विनम्रता का संदेश देते हैं। जीवन में दया तथा वाणी के माध्यम से संसार में विनम्रता का संदेश देते हैं। समाज को एक नई दिशा दिखाते हैं। जिससे मानव अपनी स्वार्थ, अहंकार, भेद–भाव, की भावना, संसारिक मोह माया मानवीय दोषों के परित्याग कर के एक पवित्र आत्माबन सके। इस पर बल दिया है। हमें उन लोगो से मित्रता नही रखना चाहिए जो छिन्द्रोन्वेषी होते हैं। कपटी लोगों से अपने आप को दूर रखना चाहिए। कबीर समाज को एक संसोधन रूप मेंदेखना चाहते थे।

"कबीरदास ऐसे ही मिलन बिन्दु पर खड़े थे, जहां एक और हिन्दुत्व निकल जाता था और दूसरी और अशिवा, जहां एक और हिन्दुत्व निकल जाता था दूसरी और मुस्लमान, जहां एक और ज्ञान भक्ति मार्ग निकल जाता है, दूसरी और योग मार्ग, जहां एक और निर्गुण भावना निकल जाती है, दूसरी और सगुण साधना। उसी प्रशस्त चौराहे पर वे खड़े थे। वे दोनों को देख सकते थे और परस्पर विरूद्ध दिशा में गए और मार्गों के गुण दोष उन्हें स्पष्ट दिखाई दें जाते थे।"15

वे कहते हैं कि समाज संबोधित तभी बन सकता है जब हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य भेदभाव को मिटाया जा सकें। समाज में धार्मिक सदभावना और साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने पर बल देते हैं। वे पूजा, जप तप, माला, छापा, तिलक केश मुण्डन व्रत, उपवास, तीर्थ यात्रा मूर्ति पूजा, को निरर्थक मानते हैं। वे कहते हैं ये सभी कुरीतियों मानव की पथ भ्रष्ट का माध्यममानते हैं। वे समस्त कुविचारों और बाह्य विचारों की स्पष्ट शब्दों में कठोर आलोचना एवं विरोध करते। संत कबीर एक महान् समाज सुधारक थे। वे बाद में एक कवि थे। उन्होंने समाज में सत्य, प्रेम का भण्डार, अज्ञान तथा घृणा, भेद–भाव, जाति प्रथा का खण्डन किया है।

निष्कर्ष–

कबीर एक महान् संत, कवि, समाज सुधारक थे। वे सारे जहाँ में सुधार लाना चाहते थे। कबीर ने अपनी सधुक्कड़ी भाषा विरोध समावेश से समाज में फैली कुरीतियों

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

तथा कुविचारों का जोर– तोर खण्डन किया। कबीर जीवन को एक ही तरीके समानता के आधार पर देखते थे। वे राम रहीम के नाम पर चल रहे भेदभाव तथा उनके बीच कुरीतियों को भरने का प्रयास किया। कबीर समाज सुधारक के साथ ही एक क्रान्तिकारी थे। जिन्होंने निडर भावना से समाज में चल रहे कुरीतियों पर अपने विचार व्यक्ति किया। कबीर समाज को प्रेम की धारा तथा एक नई दिशा देने का प्रयास किया। वे समाज तथा धर्म के नाम पर व्याप्त पाखंड, अन्धविश्वास, हिंसा व पशुबलि, मूर्ति पूजा आदि का विरोध किया। कबीर ने मानव को परिश्रम ज्ञान व कर्म को ही महान बताया है । वे अपने युग के महान दार्शनिक थे। उनके लिखे दोहा आज के आधुनिक युग में भी प्रासंगिक है। संत कबीर का सम्पूर्ण साहित्य समाज को एक सही पंथ दिखाकर उस पर चलने के लिए प्रेरणा देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1) श्याम सुंदर दास, कबीर ग्रंथावली पृष्ट 112
2) हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृष्ट 65
3) श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
4) श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
5) माता प्रसाद, कबीर ग्रन्थावली पृष्ट 65
6) हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ 65
7) शिव कुमार शर्मा (सं.) पृष्ठ 14
8) बीजक पृष्ट 388
9) श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
10) कबीरदास, कबीर बीजक
11) श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
12) जयदेव सिंह, कबीर वाणी, पीयूष पृष्ट 133
13) डॉ. पारसनाथ त्रिवारी, कबीर वाणी संग्रह
14) हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
15) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर पृष्ठ 77–78

©IJARMS JOURNAL, 2024